हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा एक ज़िन्द-ए-जावेद नमून-ए-अमल

प्रोफ़ेसर अल्लामा अली मुहम्मद नक़वी साहब क़िब्ला

अनुवादकः बिन्ते ज़हरा नक़वी ''नदल हिन्दी'' साहेबा

इस्लामी तहज़ीब में हज़रत मुहम्मद[स०] बिन अब्दुल्लाह की शख़सियत एक तारीख़ी शख़सियत नहीं है बल्कि एक अबदी हक़ीक़त भी है और ऐसी जो काएनात की सबसे बड़ी हक़ीक़त है। पैग़म्बर[स०] की ज़ात ज़मानो मकान में चमकने के साथ-साथ इरफ़ान और बलन्दी की हामिल भी है।

हज़रत मुहम्मद[स०] से मुहब्बत और उनकी नुबुव्वत पर यक़ीन, तमाम दुनिया के मुसलमानों को मुत्तफ़िक़ और मुत्तहिद करने की सबसे अहम ताक़त है। नुबुव्वत और पैग़म्बर से लगाव, मुसलमानों को एक आलमी इकाई की सूरत में पेश करती है। हज़रत मुहम्मद[स०] से लगाव और मुहब्बत और उनकी सुन्नत की पैरवी की वजह से, एशिया से लेकर अफ़्रीक़ा तक के मुसलमान आपस में हैरतनाक एका रखते हैं।

यहाँ तक कि ग़ैर भी इस हक़ीक़त को मानने पर मजबूर हैं। एक मग़रिबी लेखक लिखता हैः-

''मुसलमनों को हज़रत मुहम्मद[स०] से जो लगाव है हम मग़रिब के रहने वाले इससे अन्जान हैं और मुसलमानों के समाज में अक़ीद-ए-नुबुव्वत के अज़ीम किरदार को समझने से हम आजिज़ हैं। हम लोग पैग़म्बरे इस्लाम को सिर्फ़ एक तारीख़ी शख़सियत की नज़र से देखते हैं। जबकि मुसलमानों के नज़दीक उनकी हैसियत इससे कहीं ज़्यादा है और यही वजह है कि जाने-अन्जाने में हम मुसलमानों के दिलों को तोड़ने वाली बातें पैदा करते हैं। मैं यूरोप से इण्डोनेशिया तक जहाँ भी गया हर जगह उम्मते इस्लामिया की रगों में इश्क़े मुहम्मदी को ख़ून की तरह दौड़ता हुआ देखा, मुसलमानों के बीच भाईचारगी और एकता की सबसे अहम वजह मुहम्मद[स०] से इश्क़ है। यह अलग बात है कि पैग़म्बरे इस्लाम[स०] से मुसलमानों की मुहब्बत कई अन्दाज़ में पाई जाती है। उत्तरी अफ़्रीक़ा में पैग़म्बरे इस्लाम[स०] की शान में आरिफ़ाना और आशिक़ाना शेअ्र पढ़े जाते हैं। हिन्दुस्तान में पैग़म्बरे अकरम[स०] की पैदाईश के दिन को बड़ी शान और शौकत के साथ मनाया जाता है, क़व्वालियाँ होती हैं, इस रस्म को वह मीलाद कहते हैं। इस्लाम की एक इम्तियाज़ी शान ये भी है कि उसने अपने मानने वालों में पैग़म्बर[स०] से इस तरह के वालिहाना इश्क़ और मुहब्बत पैदा करने के बाद भी, दूसरे मज़हबों की तरह इन्सान और ख़ुदा के बीच की सरहद को खोने नहीं दिया।''

पैग़म्बरे इस्लाम[स०] बहुत सी ख़ुसूसियात के हामिल थे। जैसे गुनाह और शक से उनका महफ़ूज़ होना, उनकी बेमिसाल रहनुमाई, लाजवाब क़ुव्वते तश्कील और तामीर, शिर्क और औहाम और ज़ुल्म और सितम से बेमिसाल लोहा लेना। इसके बावजूद मुसलमान इस बात की ताकीद करते हैं कि उनके नबी इन्सान थे। मुसलमान हर रोज़ कई बार दुहराते हैं और कहते हैं ''अश्हदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू'' (मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद[स०] सिर्फ़ ख़ुदा के बन्दे और उसके रसूल हैं) और यह नुकता दुनिया के मज़हबों की तारीख़ में बेमिसाल है।

इस्लाम ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि हज़रत मुहम्मद[स०] की वह ज़ात है जो ख़ुदा की महबूब और मख़लूक़ की चुनी हुई थी, वह ऐसी शख़सियत थी जिसके लिए ज़मान और मकान बनाये गये यानी मुहम्मद[स०] इन्सान थे, और सारी ज़रूरतें जो इन्सानों को पेश आती हैं उनके अन्दर पायी जाती थीं और दूसरों की तरह मुकल्लिफ़ थे यानी उन अहकाम को जो उनके ज़रिये

लोगों तक पहुँचे थे, अन्जाम दें बल्कि कुछ मुश्किल अहकाम उनके लिए ख़ास थे (रसूले ख़ुदा[स०] पर तहज्जुद और रात की नाफ़िला नमाज़ें वाजिब थीं)।

दूसरे मज़हबों में पैग़म्बरों का इलाही तसव्वुर पैदा हो गया है और जिस मेहनत और रियाज़त को आम लोगों के लिए तैय किया है वह ख़ुद उनसे अलग थी। इसके उलट इस्लाम में पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने ख़ुद को किसी मेहनत व रियाज़त से कभी अलग नहीं रखा बल्कि दूसरों की तरह बल्कि उनसे भी ज़्यादा ख़ुदा का ख़ौफ़ दिल में था। वह दूसरों के मुक़ाबले में ज़्यादा इबादत करते थे, ज़्यादा नमाज़ें पढ़ते थे, ज़्यादा रोज़े रखते थे, जेहाद करते थे, ख़ुदा की मख़लूक़ पर एहसान करते थे और अपनी और दूसरों की ज़िन्दगी के लिये कोशिश करते रहते थे। ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए किसी पर बोझ नहीं बने। यह एक ऐसी बात है जिसकी अहमियत और अज़मत को दूसरे मज़हबों जैसे बौद्ध मत और ईसाइयत में मज़हबी रहबरों के सिलसिले में मौजूद अक़ीदों और इस्लामी अक़ीदों से एक दूसरे में ग़ौर करने के बाद मालूम किया जा सकता है।

मुसलमान अपने पैग़म्बर से वालिहाना मुहब्बत करते थे और उनका अक़ीदा यह है कि वह (हज़रत मुहम्मद[स०]) ख़ातमुल मुर्सलीन थे, अफ़ज़लुल अम्बिया थे, ख़ुदा के महबूब थे और ज़मानो मकान की पैदाइश की ज़रूरत थे। लेकिन इसके बावजूद उनका यह अक़ीदा है कि पैग़म्बरे इस्लाम सिर्फ़ मसल-ए-वह्यि और लवाज़िमे वह्यि (जैसे इस्मत और मोजिज़ा वग़ैरा) की वजह से दूसरे इन्सानों से अलग थे। वह्यि उन्हें इन्सानियत से अलग नहीं करती बल्कि इन्सानियत का ऊँचा व बलन्द नमूना बनाकर पेश करती है और इन्हीं वजहों और दलीलों की बुनियाद पर वह दूसरों की रहबरी करने वाले हैं।

पैग़म्बरे इस्लाम[स०] का दूसरे मज़हबी रहनुमाओं और दीन लाने या बनाने वालों पर दूसरी बड़ी ख़ास बात, मुक़ाबले में आना, जेहाद, तामीर व तश्कील है। ज़्यादातर मज़हबों में पैग़म्बर या दीनी पेश्वा के बारे में ख़याल सिर्फ़ मानवी, रूहानी और रोहबानी थे। ग़ैर इस्लामी दीनों में नुबुव्वत व बेसत का मक़सद सिर्फ़ रूह की पाकी और आख़िरत की कामियाबी का हासिल करना था, दीन का दुनिया से कोई ताल्लुक़ नहीं है और सियासत और समाज, दीनी रहबरों के दायरे से बाहर था। लेकिन इस्लाम में नुबुव्वत का मक़सद ख़ुदा की पहचान और उससे क़रीब होना और उसी के ज़रिये ज़ुल्म और जेहालत वग़ैरा के ख़िलाफ़ खड़ा होना है।

इसी वजह से पैग़म्बरे इस्लाम[स०] दूसरे मज़हबों के लाने और बनाने वालों के उलट एक ''पैग़ाम पहुँचाने वाले'' न थे बल्कि ख़ुदा के अहकाम को बताने और उन पर अमल करवाने के लिए भी क़दम उठाये और शिर्क व तारीकी और ज़ुल्म और जाहिलियत की जड़ काटने के लिए खड़े भी हुए और ऐसे समाज और तहज़ीब की बुनियाद रखी और एक ऐसी उम्मत बनायी जिसने क़ैसर और किसरा के महलों को हिलाकर रख दिया और बादशाहों के तख़्त व ताज को झुका दिया।

पैग़म्बर के बारे में यह ख़याल जो इस्लाम ने पेश किया है और जो हज़रत मुहम्मद[स०] की ज़िन्दगी में सामने आया है, दूसरे मज़हबों में दीनी पेश्वाओं से बहुत ऊपर है। दूसरे मज़हबों में रहबरों के इरफ़ानी और रूहानी तजरुबात, समाज से दूरी, रेगिस्तानों और पहाड़ों, दैर में रहने की वजह होती है। लेकिन इस्लाम में जैसा कि अल्लामा इक़बाल ने निशानदही की हैः पैग़म्बर इरफ़ानी तजरबात की गहराईयों से समाजी ज़िन्दगी तक वापस आता है और ज़माने के हालात में दाख़िल होता है ताकि तारीख़ के बहाव को क़ाबू में करे और इस तरीक़े से कमाले मतलूब की एक नई दुनिया पैदा कर सके''।

इस तरह बक़ौल उस्ताद शहीद मुतह्हरी ''इस्लाम में पैग़म्बर रूहानी रास्तों से ख़ल्क़ की तरफ़ से ख़ालिक़ की तरफ़ लौटता है यानी .... लेकिन इसका खुला हुआ नतीजा यह होता है कि जब वह इन्हीं रास्तों से मख़लूक़ की तरफ़ वापस आता है तो अपने साथ एक इरादा लेकर लौटता है इन्सानी ज़िन्दगी के सुधार का इरादा और इस तरह .... पर उसका ख़ात्मा होता है।''

इस्लाम की यही दो बातें यानी पैग़म्बर का इन्सान होना और इज्तेमाई व सियासी ज़िन्दगी में पैग़म्बर का ख़ुद भी शामिल होना है कि पैग़म्बर अपने मानने वालों

बक़िया पेज ....9 पर

मगर हक़ीक़त में देखिये तो छोटे-छोटे बच्चों की सूरतें आँखों के सामने, ज़ैनब[अ०] और कुलसूम[अ०] के बुर्के और चादर का ख़याल ज़हन में, और दुश्मनों के वहशियाना मज़ालिम का तसव्वुर दिमाग़ में, और इन सब के होते हुए भी फ़ासिक़ की बैअत से अलग रहने का पक्का इरादा दिल में, वह एक मुस्तक़िल और मुसलसल शहादत थी जिसे हुसैन[अ०] अपनी हर साँस और हर जुम्बिशे नज़र के साथ अपनी ज़िन्दगी के हर हर लम्हे में अदा कर रहे थे।

और सातवीं मुहर्रम से पानी बन्द हो जाने के बाद छोटे-छोटे बच्चों के मुँह से निकलती हुई अलअतश की सदाओं को सुनते हुए, सकीना के ख़ुश्क होंठ और अली असग़र की जाँबलब हालत देखते हुए, इन्कारे बैअत पर क़ायम रहना वह बेपनाह शहादत थी जो हक़ को हक़ साबित कर देने की ज़मानतदार बन रही थी।

फिर आशूर के दिन उन्होंने अपनी इस्तेलाही शहादत से पहले कम से कम बहत्तर शहादतें अपने हाथों से पेश कीं जैसे हक़ की दस्तावेज़ पर ख़ून की बहत्तर मुहरें लगा दीं जिनमें क़ासिम[अ०] के बचपन, अली अकबर[अ०] के शबाबे मुहम्मदी और अबुलफ़ज़्ल की शुजाअते हैदरी की शहादत क्या कम थी कि आख़िर में छः महीने की जान अली असग़र[अ०] ने जो हर मज़हब की ज़बान में मासूम थे बाप के हाथों पर दम तोड़कर हक़ की ला ज़वाल ताक़त की अबदी तस्दीक़ की और जब ये शहादत भी हुसैन[अ०] पेश कर चुके तो शरीअते इस्लाम के क़ानून के मुताबिक़ ख़ुदा के रास्ते में जेहाद के फ़रीज़े को शानदार तरीक़े पर अदा करके अस्र के वक़्त सजद-ए-ख़ालिक़ में क़ातिल के ख़ंजर के हाथों हुसैन[अ०] ने अपनी जान भी ख़ुदा के रास्ते में निसार कर दी और इस तरह ये बेनज़ीर शहादत उस बेमिसाल मेयार पर पेश हुई कि जब तक हुसैन[अ०] की क़ुर्बानी की याद क़ायम है और वह हमेशा रहेगी उस वक़्त तक हक़ नुमायाँ है और वह हमेशा नुमायाँ रहेगा।

बक़ौल ख़्वाजा ग़रीब नवाज़ः

सरदाद नदाद दस्त दर दस्ते यज़ीद
हक़्क़ा कि बिनाए ला इलाह अस्त हुसैन[अ०]

❁❁❁
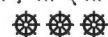
(बक़िया.... हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स०] एक...........)

को आने वाली नसलों के सामने नमूने के तौर पर सामने आएं। जबकि दूसरे मज़हबों में एक मज़हबी पेश्वा को उलूहियत का दर्जा देते है, जिसकी वजह से उसकी ज़ात उसके मज़हब के मानने वालों के लिए नमूना नहीं बन सकती। इसके उलट पैग़म्बरे इस्लाम[स०] की ज़ात तमाम इन्क़ेलाबी मुसलमानों के लिये क़यामत तक के लिए एक अमली नमूना है। दुनिया के किसी हिस्से और किसी ज़माने में इस्लामी इन्क़ेलाब में कोई ऐसा मौक़ा नहीं है जिसके लिए पैग़म्बरे इस्लाम की ज़िन्दगी नमूना न हो।

पैग़म्बरे इस्लाम[स०] की तबलीग़ में रुकावट पैदा करने वाले

1- तहरीफ़ करने वाले (ईसाई और यहूदी जिन्होंने आसमानी किताबों में अपनी मर्ज़ी से बदलाव किये)

2- फ़िक्री और अख़्लाक़ी माद्दा परस्त (ज़्यादातर क़ुरैश के मुश्रिक इसी गिरोह से थे जो नफ़्सपरस्त और पेट के पुजारी थे)

3- मक्का और मदीने के सियासी लोग, हुकूमत और इक़्तेदार वाले क़ौम परस्त लोग थे।

4- मक्के और मदीने के सियासी लोग, क़ौम परस्त और ताक़तवर लोग (अबूसुफ़यान, अबूजहल और अबूलहब क़ुरैश की क़ौम परस्ती के नुमाइन्दे और अब्दुल्लाह इब्ने उबइ, मदीने की क़ौम परस्ती का नुमाइन्दा) हैरह, असान, ईरान व रूम से मुताल्लिक़ लोग (उस ज़माने की बड़ी ताक़तें और उनके काम करने वाले), सियासी ताक़तें, इक़्तेसादी ताक़तें, काबा के मुतवल्ली और दरबारी मज़हब की रस्मी ताक़त। पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने इन सबके बारे में इस्लाम की सोच को साफ़ कर दिया। 14 सौ सालों बाद इस्लामी इन्क़ेलाब भी उन्हीं मोर्चों से दोचार हुआ। इस तरह पैग़म्बरे इस्लाम[स०] हर ज़माने में मुसलमानों के लिए जीता जागता अमली नमूना हैं। ❁❁❁